International Journal of Multidisciplinary Research in Social Science

ISSN: 2455-7943

bLyke l iol vjck dk lkekftd thou

MkO ukghn Q¸;kt fdnob

न्यू मक्कागंज, सीतापुर रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

जिस प्रकार अरब भूमि की दो क़िस्में हैं उसी प्रकार यहां की आबादी दो प्रकार की हैं एक ख़ानाबदोश और दूसरे स्थायी निवास करने वालें इन दोनों के बीच कभी–कभी अन्तर करना कठिन हो जाता है। क्योंकि कुछ लोग केवल ख़ानाबदोशी की हालात में हैं और कुछ केवल नाम के शहरी है। फिर भी उनमें विभिन्न श्रेणियां है। वह शहरी जो एक समय में बद्दु थे उनकी बद्दुयत स्पष्ट होती रहती है और उधर ऐसे भी बद्दु मिलते है जो स्थायी रूप से निवास ग्रहण करने की स्थिति में है। इस प्रकार शहरी आबादी में ताज़ा रेगिस्तानी ख़ून के आने का क्रम बराबर जारी है।[1]

अरब के बद्दु उन बेघर लोगों में नही हैं जो केवल घूमने के लिए मारे फिरते है। वास्तव में वह अच्छा उदाहरण है इस बात का कि आदमी रेगिस्तानी जीवन किस प्रकार व्यतीत कर सकता है जहां कहीं हरियाली मिलती है वह चारागाहों की तलाश में वहां पहुँच जाते हैं नफ़ूद के क्षेत्रों में ख़ानाबदोशी ऐसे ही बक़ायदा कला है जिसे शहरी और रेगिस्तानी व्यक्तियों के बीच खींचा तानी का कारण अपनी ग़रज और अस्तित्व के लिए है। रेगिस्तानी अपने से अधिक आराम से रहने वालों से वह सामान लेने पर मजबूर है जो उसे प्राप्त नहीं है और यह कार्य ज़र्बदस्ती छापे मार कर किया जाता है या रज़ामन्दी से वस्तुओं का आदान प्रदान होता है।

बद्दुओं को देखिए तो आज भी वही है जो पहले था और भविष्य में भी ऐसा होगा। इसकी तरबियत का ढंग हमेशा से एक सा रहा परिवर्तन, उन्नति, कानून को खुशी से स्वीकार नहीं करता अन्जाने विचारों और आदतों की बाढ़ से वह अन्जान रहा इसलिए आज भी ऊँट, बकरी के बालों के ख़ेमें में उसी प्रकार जीवनयापन करता है जिस प्रकार इसके बाप दादा गुज़ारते थे और इन्हीं चारागाहों में उसी प्रकार भेड़ बकरियां चराता है। ऊँट, भेड़, बकरी और कम संख्या में घोड़ो की परवरिश शिकार खेलना छापे मारना ये उसके ख़ास व्यवसाय है और उसके ख़्याल में मर्द के क़ाबिल पेशे ही ये है। खेती बाड़ी हर प्रकार का व्यापार और दस्तकारी सदा घटिया और उसकी शान के ख़िलाफ़ है। जब कभी वह अपने माहौल से निकल जाता है तब वह बद्दु नहीं रहता है।[2]

उत्तरी अरब में कितनी सल्तनतें बनी बिगड़ी अपने ग़ैर आबाद रेगिस्तान में बद्दु ही रहा जैसा हमेशा से था। वह और ऊँट व खंजूर यही सम्पत्ति है जिनकी दशा अरब पर हुकमरानी है। रेंत को शामिल कर लिया जाये तो इन्ही चार तमाशागरी पर रेगिस्तान की रौनक़ का आधार है। यहाँ के निवासियों के लिए रेगिस्तान इनका आधार नही बल्कि इनके देर तक टिकने वाले रीतिरिवाज का साक्षी। इनकी नस्ल व भाषा की सुरक्षा और बाहरी दुनिया

के मुक़ाबले में इनका पहला और अन्तिम मोर्चा पानी की कमी गर्मी की झुलसाहट मार्गो का खोजना खाने–पीने की वस्तओं की कठिनाई होना साधारण स्थिति में बहुत सताते है। ख़तरे के समय यही पक्के दोस्त बन जाते है। इसलिए अगर अरब ने अपनी गर्दन अंजान शासन के सामने शायद कभी नही झुकाई तो क्या आश्चर्य की बात है।

बद्दु की दिमाग़ी और शारीरिक शक्ति में भी उसकी रेगिस्तानी झलक दिखायी देती है। बद्दु लोग खजूरो, मिला जुला आटा या भुना अनाज दूध या पानी के साथ इसका प्रतिदिन भोजन है। जैसा भोजन वैसी ही पोशाक इसकी है लम्बा कुर्ता (सोब) कमर के पटके से बंधा हुआ फटर फटराते दामनों के अबावे तस्वीरों ने मानूस बना दिया है। सर पर शाल रूमाल एक रस्सी या अक़ाल से बांध लेते है। पैजामा नहीं पहनते और पांव में जूता भी कभी कभार होता है। लेकिन धीरज व धैर्यबद्ध की मुख्य विशेषता है। इन्हीं के कारण वह ऐसी जगह जीवित रहता है जहाँ उसके अलावा हर वस्तु समाप्त हो जाती है।[3]

इन्हीं विशेषताओं का दूसरा रूख जमूद को समअिरा सब एक हाल में रहना चाहते चाहे कितना ही कष्ट न हो, उसे पसन्द है क्योंकि वह किसी परिवर्तन के लिए हाथ पांव हिलाना नही चाहता दूसरी विशेषता व्यक्तित्व इसके स्वभाव पर इतनी प्रभावशाली है कि बद्दु अंर्तराष्ट्रीय श्रेणी के आदमी तक कभी ऊँचा न हो सका और अपने क़बीले की सीमा तक सोच विचार करने के अलावा व्यक्ति को ख़ुशहाली के विचार पाने की कभी उसे साहस नहीं हुआ। कानून या शासन का आदर और नियमों की रेगिस्तानी जीवन में पूजा नहीं की जाती। हज़तर इस्माईल से लेकर आज तक बद्दु सारी दुनिया का और सारी दुनिया बद्दु की दुश्मन चली आती है।

बद्दु समाज का आधार जातियों की तंज़ीम पर है। हर ख़ेमा एक घर या ख़ानदान होता है ख़ेमों का इकट्ठा पड़ाव 'हे' कहलाता है और इसके व्यक्तियों से क़ौम या बिरादरी बनती है। कई बिरादरियां मिलकर क़बीला कहलाता है। बिरादरी के लोग एक दूसरे को एक ख़ानदान समझते और एक सरदार अर्थात बुजुर्ग की अधीनता स्वीकार करते है। इनका नारा जंग एक होता है। बिरादरी का सामूहिक नाम का इज़हार बनु या बनी से किया जाता है।

कुछ बिरादरी के व्यक्तियों के नाम से पता चलता है कि किसी प्राचीन काल में वंश माँ से चलता था। क़बीले की व्यवस्था को स्थापित रखने में फ़र्ज या असली ख़ून का रिश्ता सुकून पहुँचाता है। ख़ेमा और इसकी छोटी मोटी सम्पत्ति व्यक्तिगत सम्पत्ति होती है। किन्तु पानी–चरागाह और क़ब्ज़ा की गयी ज़मीन सामूहिक विरासत समझी जाती है।

बिरादरी का कोई व्यक्ति अगर बिरादरी वाले की हत्या कर दे तो इसकी कोई मद्द नही करेगा और वह बचकर भाग जायेगा तो 'मसवाह अल्लदम' तरीद कहलायेगा। बिरादरी के बाहर कोई किसी को मार डाले तो सारी बिरादरी बदले की सज़ावार ठहरायी जायेगी और क़त्ल किये गये व्यक्ति के वारिस इस बिरादरी के किसी आदमी को मार कर बदला लेगा।

रेगिस्तानी क़ानून की आत्मा से ख़ून का बदला ख़ून से होता है और कोई दूसरी सज़ा बदले के लिए काफ़ी नहीं मानी जाती। सबसे क़रीबी रिश्तेदार पर बदले की ज़िम्मेदारी होती बदले की लड़ाई चालीस वर्ष तक रह सकती है जैसे बनुबक्र और तग़लब का बसूस युद्व में हुआ। इस्लाम से पूर्व के क़बायली युद्धों में इतिहासकार बल देते है कि अत्यन्त फ़सादी क़िस्म के बदले की भावना थी यद्यपि अधिकतर झगड़े की बुनियाद में आर्थिक कारण होते थे। क़बीलों में कभी–कभी खून बहा भी स्वीकार कर लिया जाता है।

बद्दु के लिए क़बीले से निकाला जाना सबसे बड़ी मुसीबत है ऐसे देश में जहाँ अजनबी और दुश्मन एक समान हैं। एक बिना क़बीलों का व्यक्ति बिना हाथ–पांव होता जैसे जागीरदारी इंगलिस्तान में वह लोग थे जिनकी कोई ज़मीन न होती थी। ऐसा व्यक्ति सुरक्षा और जीवन की सीमा से बाहर बिल्कुल अकेला रह जाता है जिसका जी चाहे उसे लूट ले या मार डाले।[4]

बिरादरी का आधार तो जनाधिकार है किन्तु एक बाहरी व्यक्ति बिरादरी के किसी व्यक्ति के खाने–पीने में शामिल हो जाये तो इसके खून की कुछ बूंद चूस ले तो वह बिरादरी में शामिल कर लिया जाता है। प्राचीन यूनानी लेखक हरबदवक्तस तबनीत की इस रस्म का वर्णन करता है आज़ाद किए हर गुलाम बराबर अपना लाभ इसमें देखते कि पहले के मालिक के घराने से सम्बंध स्थापित रहे। अर्थात इसी तरह से बद्दु अकसर उनके मौला बन जाते।

यदि कोई अजनबी से रिश्ता स्थापित करें तो इसे दख़ील कहते है। कभी–कभी कोई कम संख्या वाली बिरादरी किसी बड़ी बिरादरी या क़बीले की हिमायत इस तरीक़े से प्राप्त करती और पूरी–पूरी इस गिरोह में मिल जाती बनीते अजक़ान, बनी तग़लब आदि जिनका नाम इतिहास में मुख्य रूप से है और जिनकी सन्ताने अभी तक अरब देश में उपस्थित है।

इसी प्रकार उत्तरी अरब की बिरादरियों के मिलने से बने है इस प्रकार से एक धार्मिक रीति से संभव था कि कोई अजनबी व्यक्ति माअबूद की सेवा के माध्यम से वहाँ के मुजाविर या भोली गान लिया जाये।[5] मक्का के हाजियो को आज भी अल्लाह का मेहमान कहते है और हरम शरीफ़ या किसी दूसरी बड़ी मस्जिद में रहने वाले विद्यार्थी मुजाविर अर्थात हमसारा कहलाता है।

1. तारीख़े अरब पृ0–30
2. तारीख़े अरब पृ0–31
3. तारीख़े अरब पृ0–32
4. तारीखे अरब पृ0–37
5. तारीख़े अरब पृ0–38